International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 21-25

मन्नू भंडारी और उशा प्रियंवदा की कहानियों में विवाहित और अविवाहित स्त्रियों की छवि की विवेचना

कु. कांता राधवानी[1], डॉ. नीता सिंह[2]

[1] सहायक शिक्षिका (हिंदी), हरक्रिशन पब्लिक स्कूल, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत।

[2] अध्यक्ष (हिंदी विभाग), श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

प्राचीन काल में नारी को क्षमा, तेज, गंभीर, शीतल तथा उच्च स्वरूपिणी माना जाता था। लेकिन समय के परिवर्तन के अनुरूप नारी का रूप बदल गया। सुशिक्षित नारी ने नौकरी करना शुरू की। आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी परिवार में पति की सहयोगी सिद्ध हुई। मन्नू भंडारी की सशंक्त तुलिका भारतीय नारी के इन बदलते स्वरूपों का सटीक चित्रण करने में सक्षम रही हैं। मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर कथा–साहित्य की बहुचर्चित महिला लेखिका हैं। वह नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने में सक्षम दिखती है। मन्नू जी की रचनाओं में नारी के विभिन्न पारिवारिक रिश्तों और व्यापक सामाजिक संदर्भों का अंकन हुआ है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों से बदलते सामाजिक स्थिति के प्रति सजग नारी को गढ़ा है।

उशाजी के कथा साहित्य में पाश्चात्य प्रभाव अधिक मात्रा में है। उनका कथा साहित्य आधुनिकता से ओत–प्रोत है। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव आधुनिक भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है। वह परंपरागत जीवन के सभी बंधनों को तोड़कर आधुनिक जीवन जीती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचनाओं में चित्रित स्त्री स्वंतत्र रूप से अपनी सार्थकता की तलाश कर रहीं है। उनकी स्त्रियाँ ''मैं इस पुरूष के लिए क्या हूँ'' यह नहीं देखती, बल्कि ''मैं क्या हूँ'' यह देखती है। पहला वाक्य स्त्री की सार्थकता को पुरूष के साथ जोड़कर देखने का है, जो परंपरागत है, और दूसरा वाक्य स्त्री की अपनी पहचान आप नहीं बना पाएगी तब तक समाज की नजरों से नहीं देखेगा। यह वाक्य स्त्रियों को प्रतिश्ठित करने का सूत्र वाक्य है। लेखिका स्त्री की सम्मानित छवि का निर्माण करने का प्रयास कर रही हैं, यही उनके साहित्य की विशेषता है।

मूल शब्द: विवाहित, अविवाहित, छवि, संघर्ष, विवशता

प्रस्तावना

आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों का विघटन जीवन के समस्त क्षेत्रों में तेजी से हो रहा है। शिक्षा के फलस्वरूप व्यक्ति सत्ता को प्रतिष्ठित करने की कामना आज आधुनिक नारी में पनप रही है। शिक्षित, आत्मनिर्भर नारी पति की उपलब्धियों के सामने अपने अस्तित्व को मिटाने का पक्षपाती नहीं है। हर हाल में वह अपने अस्तित्व को कायम रखने का सशंक्त प्रयास करती है। लेकिन पुरूष–सत्तात्मक विचारधारा से प्रभावित पति उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को मिटाकर उसे घर–गृहस्थी के चारदीवारी में बंदी बनाने का इच्छुक है। फलतः नारी 'स्व' की रक्षा हेतु छटपटाती दिखती है। ऐसे नारी पात्रों का उद्घाटन मन्नूजी ने 'कमरे कमरा और कमरे', 'नई नाकरी', 'आकाश के आईने में' किया है।

उशा प्रियवंदाजी स्वात्रंत्र्योत्तर काल के हिंदी साहित्य की बहुचर्चित महिला कहानीकार है। यह नारी जीवन के क्षणों को वाणी देनेवाली सुप्रसिद्ध लेखिका है। साहित्य की युगों पुरानी कथा रूढ़ियों के मलबे के नीचे से नारी के मौलिक व्यक्तित्व का अनवेषण, उनके चरित्र का यथार्थ और निस्संग विश्लेषण करने वाली लेखिकाओं में उषाजी का नाम शीर्षस्थान पर आता है। उनकी कहानियों में अनुभव की प्रमाणिकता है। यथार्थ को व्यक्तित्ववादी दृष्टि से देखने का परिणाम यह हुआ कि, बदली हुई परिस्थितियों में हमारे पारिवारिक संबंध, रिश्ते–नाते, रहन–सहन, जिस रूप में बदलता रहे उन सबका सक्षम अंकन इन कहानियों में हुआ है। संबंधों का यह बदलाव परिवार में माँ, पिता, संतान, भाई, पति, पत्नी, आदि विविध स्तरों पर देखा जा सकता है। सैध्दान्तिक संबंधों का टूटना, स्त्री पुरूष संबंधों के चित्रण में अधिक दिखाई देता है। स्त्री–पुरूष दोनों स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहते हैं। इन कहानियों के माध्यम से विवाह और प्रेम संबंधी एक नई दृष्टि विकसित होती दिखाई देती हैं। कहानीकार ने नारी अस्मिता को उनके संघर्ष को कथाभूमि के रूप में स्वीकार किया है।

कामकाजी नारियों का दुख उसकी घुटन, कुंठाएँ, उनकी सामाजिक अवस्था, उनकी मजबूरी, विवशता, उनका मानसिक संघर्ष से सब उषाजी के कथा साहित्य के विषय बन गये है। नारी के वर्तमान का मंथन उन्होंने नये ढंग से किया है। नारी द्वारा नारी मन की गाथा कहने की एक नवीन परंपरा उषाजी ने शुरू की।

मन्नू भंडारी की कहानियों में विवाहित स्त्रियों की छवि

'कमरे कमरा और कमरे', कहानी की नीलिमा होनहार, प्रतिभा संपन्न और प्राध्यापिका पद पर कार्यरत है। लेकिन विवाहोपरांत, उसे सब कुछ तजकर पतिगृह जाना पड़ता है। पति के घर में प्रारंभिक जीवन खूबसूरत लगती है। लेकिन बाद में उसे जीवन के यथार्थ से टकराहट करना पड़ता है। कहानी की पंक्तियाँ इसकी गवाही देती है– ''श्रीनिवास अपने काम में लगा रहता था और वह अकेली–अकेली बोर होती थी।''(01) आखिर श्रीनिवास ने बड़ी चतुराई से नीलिमा को अपने कारोबार में जुटा दिया। अंत में वह पति की एक विश्वनीय मेहनतकश कर्मचारी सिद्ध हुई। तब वह महसूस करती है कि, उसकी सारी उपलब्धियाँ केवल कमरों में ही नहीं लकड़ी के बक्सों में बंद हैं। इस स्थिति से उनके मन में मोहभंग का संचार होता है लेकिन नीलिमा ने चाहकर भी अंत तक निर्वाक् रह जाती है।

'नई नौकरी' की रमा दोहरे दायित्व से पीड़ित पत्नी की भूमिका

अदा करती है। पति के; कारोबार, कंपनी में आयोजित पार्टियों में साज–श्रृंगार करके जाना और अपने घर को सजाना ही उसका ध्येय रह गया। नौकरी से वंचित रमा का मन पीड़ा का अनुभव करती है। लेकिन पति की तरक्की के लिए वह अपना व्यक्तित्व न्योछावर करने को विवशं है। इस संदर्भ में डॉ. दिलीप मेहरा का कथन सार्थक है– ''पुराने मूल्यों के अनुसार हर स्त्री को विवाह के बाद अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व पति को समर्पित कर देना है। स्त्री को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का अधिकार नहीं दिया गया है। परंतु आधुनिक जीवन मूल्यों के अनुसार नारी को भी अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता बनाये रख्ने के लिए अधिकार मिला है। लेकिन नारी जब तक अर्थोपार्जन नहीं करती तब तक कुछ संभव नहीं है।''(02) रमा कॉलेज में इतिहास का प्राध्यापिका है। पत्नी के सिवा वह अपनी एक अलग पहचान बनाये रखती है। लेकिन कुंदन की महत्वाकांक्षा और अधिकार ने रमा को घर की चारदीवारी में रहने को विवशं किया। कहानी की पंक्तियाँ इसकी गवाही देती है– ''रमा को लगा जैसे कुंदन उसे पीछे छोड़कर आगे निकल गया है। बहुत आगे। जैसे वह अकेली रह गई है।''(03) इस अकेलेपन की घनी छाया में रमा बिल्कुल गल जाती है। इसके संदर्भ में डॉ. पुष्पपाल सिंह का कथन सार्थक है– '''नई नौकरी' की पत्नी रमा अपने पति कुंदन की नई नौकरी से इसलिए त्रस्त है कि उसके कारण उसका अस्तित्व भूला गया है।''(04) पति अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति में पत्नी का सहयोग चाहता है। लेकिन वह नारी की अस्मिता की उपेक्षा करता है। फलतः नारी जीवन तनावग्रस्त हो जाता है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन हुआ। फलतः मध्यवर्गीय परिवार की सुशिक्षित नारियाँ प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगी। नौकरी एवं घर गृहस्थी को संभालने में उन्हें काफी संघर्ष झेलना पड़ा। 'आकाश के आईने में' की प्रीति 'कमरे, कमरा और कमरे' की नीलिमा और 'नई नौकरी' की रमा अपने पति के आदेशानुसार नौकरी छोड़ देने को विवश होती है। घर–गृहस्थी एवं नौकरी के बीच पड़नेवाली नारियों के द्वंद्वात्मक स्वरूपक का चित्रण मन्नू भंडारी जी ने बखूबी से किया है।

वैवाहिक जीवन का नकारात्मक स्परूप

भारतीय संदर्भ में विवाह सामाजिक प्रथा और पवित्र धार्मिक संस्कार है। लेकिन आजकल वैवाहिक जीवन संबंधित परंपरागत मान्यताएँ नगण्य दिख पड़ती हैं। आधुनिक सुशिक्षित नारी विवाह को निरर्थक बंधन और व्यक्तित्व विकास में बाधा मानने की पक्षपाती है।

'जीती बाजी की हार' की मुरला वैवाहिक संबंध को अस्वीकार करनेवाली, स्वतंत्र नारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कहानी में आशा, नलिनी, और मुरला कॉलेज की छात्राएँ हैं। इनकी रूचि पढ़ना, लिखना और वैचारिक बहस करने के अतिरिक्त और किसी बात में नहीं है। वे तो निरंतर विवाहित लड़कियॉ पर फब्तियाँ कसती रहती हैं। उन्हें लगता है, ''एक पढ़ी–लिखी लड़की किस प्रकार अपने विचारों और व्यक्तित्व का खून करके इस प्रकार पति के रंग में रंग सकती है।''(05) इनमें आशा और नलिनी ने विवाह संबंध में अपने को बाँध दिया। अत्यधिक महत्वाकांक्षी मुरला ने विवाह नहीं किया। वह स्पष्ट कह देती है– ''विवाह को बंधन समझती है। विवाह के परिणाम बच्चों को उन्नति का बंधन समझती है।''(06) लेकिन मुरला अपने जीवन में अकेलेपन और रिक्तता महसूस करती है। इस संबंध में संदर्भ में डॉ. विजया वारद का कथन उल्लेखनीय है– ''जो दाम्पत्य की व्यवस्था को नकारकर अकेले में जीना चाहती है, उनका यह निर्णय उन्हें कितना खोखला और अकेला बना देता है।''(07) वैवाहिक संबंध को जीवन की प्रगति में बाधा माननेवाली आधुनिक नारी भी कभी–कभी अपने चारों ओर घिरी रिक्तता के आगे छटपटाती दिखती है।

परिवार में जकड़ी नारी

आधुनिक सुेशिक्षित नारी सामाजिक बेड़ियों के घेरों से धीरे–धीरे मुक्त होने लगी। परंपरागत भारतीय नारियों की घर की चारदीवारी के बारे में अभिशप्त जीवन बिताने के लिए विवश थी। लेकिन शिक्षा के प्रचार–प्रसार से नारी आत्मनिर्भर होने लगी। लेकिन जबरदस्त पुराने मूल्यों से नारी पूर्णतः मुक्त नहीं हैं। इसलिए वह स्वतंत्र नहीं हैं। परंपरा से मिश्रित मूल्यों से जकड़ी नारी का समावेश मन्नू भंडारी की कहानियों में परिलक्षित हुआ है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' की 'रूप' और 'गीत का चुंबन' की 'कनिका' ऐसी नारी पात्र का दस्तावेज है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप माँ की मृत्यु के पश्चात विमाता के कठोर अनुशासन में जीवन बिताती है। लेकिन पिता उसे मामा के घर भेजने को विवश हो जाता है। वहाँ रूप, ललित से परिचित होती है। जब ललित विदेश जाता है तब वह रूप से कहता है– ''लौटूँगा तो मुझे इसी हालत में लौटा दोगी। ऐसा न हो कि मैं लौटूँ और देखूँ कि, तूने रूप को किसी और के घर का श्रृंगार बना दिया है। तू बड़ी कमजोर है रूप, इसी से मन डरता है। बोल रूप मेरी धरोहर को रख सकोगी न ?''(08) ललित के विदेश जाने के बाद पिताजी तथा मामा–मामी के आग्रह पर रूप चुपचाप एक वकील से ब्याह कर लेती है। विदेश से लौटे ललित रूप के घर में रूक जाता है। ललित रूप से उसके साथ भाग निकले की बात कहता है। पहले रूप पुराने संस्कारों के कारण ललित की बात का विरोध करती है। बाद में ललित की बातों से प्रेरित होकर उसके साथ भाग जाने तथा उसके साथ जीवन बिताने की कल्पना करती है। रात को एक बजे दोनों भागने का निश्चय करते हैं। लेकिन रात नौ बजे पति लौट आया और देर से लौट आने का कारण बताते हुए कहा– ''आज एक बड़ा पुराना मित्र मिल गया था। उसी से बातें करने में देरी हो गई बड़ी मुसीबत मे था बेचारा। उसकी स्त्री किसी आशिक के साथ भाग गई।''(09) रूप का चेहरा फीका पड़ जाता है। पत्नी की मनःस्थिति से अनभिज्ञ पति ने कहा, ''पढ़ी–लिखी ! अरे ! पढ़ी–लिखी, तो तुम भी हो, भागने की बात तो दूर रही, दो साल हो गये, मुझे कभी याद नहीं पड़ता कि तुमने आँख उठाकर भी किसी पुरूष से बात भी की हो।''(10) यह सुनकर वह भागने का इरादा छोड़ देती है। रूप के बारे में डॉ. दिलिप मेहरा का कथन उल्लेखनीय है– ''माता–पिता, परिवार, मामा–मामी और अंत मे पति के संस्कारों से आक्रांत वह लड़की अपनी मानसिक कमजोरी के कारण अपने प्रेमी के साथ भाग जाने में कामयाब नहीं होती।''(11) इसी प्रकार रूप पुराने एवं आधूनिक संस्कारो के बीच पिसती दिखती है।

मन्नू भंडारी की 'गीत का चुंबन' की कविता का गीत सुनकर उसका मित्र निखिल उसे चूम लेता है। इस बात पर क्रोधित हो जाती है और निखिल को जोर से चाटा मारती है। परंतु कनिका जिस बात को लेकर अत्यंत क्रोधित हुई है। उसी बात पर उसका मन तड़पता है। दूसरी शाम होते–होते वह सदा की तरह निखिल की प्रतीक्षा करती है– ''उसकी बेचैनी बढ़ती जाती है। वह बड़ा अनमना महसूस करने लगती है। उस दिन, रातभर वह करवटें बदलती रही। उसके हाथ, उसकी गर्दन, कीसी के स्पर्ष के लिए तड़पती है।''(12)

निखिल वहाँ से दूर भागता है। कनिका बहुत दुःख का अनुभव करती है। नारी मन वस्तुतः इच्छित पुरूष के संपर्क में आने को लालायित रहता है। आधुनिक नारी साफतौर पर यह प्रकट करती है। लेकिन कनिका परंपरागत मूल्यों को बदल नहीं पाती। मन में

निखिल को चाहकर भी वह अपने मूल्यों पर टिकी रहती है। वह घुटन को झेलने के लिए विवश है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में विवाहित स्त्रियों की छवि

जिंदगी और गुलाब के फूल कहानी संकलन में संकलित 'पॉरंबुलेटर कहानी में एक गरीब माँ–बाप को अपनी पुत्री के इलाज के लिए पॉरंबुलेटर बेचनी पड़ती है। 'मोह बन्ध' कहानी में नीलू कई पुरूषों के संपर्क में घुलती रही है। इसके विपरीत अंचला एक व्यक्ति से जुड़ती है और उसके टूटने पर अपने में टूटती ही चली जाती है। 'जाले' कहानी में कौमुदी और राजेश्वर विवाह से पूर्व अपने अपने एकांत में संतुष्ट और सुखी थे। विवाह करने पर राजेंद्र इस बात को समझ नहीं सकते कि विवाह एक ऐसी संस्था है। जहाँ दोनों एक–दूसरे को स्वतंत्रता देते हुए भी एक–दूसरे पर नियंत्रण रखना चाहते हैं। 'छुट्टी का दिन' अकेलेपन के बोध को उजागर करती है। 'कच्चे धागे' कहानी की कुंतल के चारों तरफ अभाव ही अभाव था। वह अपनी स्थिति को भूलकर असाधारण सपने देखती है, लेकिन इंद्रधनुशी सपने उसकी सतरंगी चूड़ियों के समान टूटकर बिखर जाते हैं।

'पूर्ति' की तारा अपने जीवन के अकेलेपन से व्यथित है। ऐसी अवस्था में उसकी मुलाकात नलिन से होती है। वही उसके जीवन के शून्य को भर देता है। ''कटीली छाँह' एक ऐसे मास्टर साहब की कहानी हैं जिन्होंने बयालीस साल की उम्र में अड़तीस साल की इंद्र से शादी की। 'दो अंधेरे' की कौशल्य अपने छोटे अभावग्रस्त एकांत में अपने पति के साथ परम सुखी थी। परंतु उसका पति उसके सहज प्राप्य शरीर के आगे किसी और के अप्राप्य शरीर की खोज में निकल पड़ता है। 'चाँद चलता रहा' कहानी में रोहिणी शर्मा अरविंद से केंद्रित है। अरविंद ने उसे विवाह से पूर्व समर्पण माँगा था। उसने इंकार कर दिया। कुछ ही दिनों बाद वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यही नैतिकता उसे बार–बार छीलती–तराशती है। 'दृष्टिदोश' में एक दिशा में मधुर खड़ी है तो दूसरी में सांब। 'वापसी' उशा प्रियवंदाजी की श्रेष्ठ कहानी है आधुनिक सुग में बूढ़ों की स्थिति कितनी दयनीय होती जा रही है। इसका चित्रण यह कहानी करती है। जिंदगी और गुलाब के फूल कहानी एक बेरोजगार युवक के घर में होने वाली उपेक्षा और कामकाजी नारी का घर में बढ़ते हुऐ सम्मान को उजागर करती हैं।

कितना बड़ा झूठ

'कितना बड़ा झूठ' कहानी संकलन में संकलित 'संबंध' कहानी की श्यामला बंधे–बंधाये जीवन से मुक्त होकर उसे अपने ढंग से जीना चाहती है। 'कितना बडा झूठ' की किरन विश्वेश्वर से गठबंधित है, फिर भी मैक्स से जुड़ी हुई है। मैक्स के साथ जो उसके संबंध रहे हैं, उनके लिए उसके मन में न तो कोई ग्लानि है न ही पश्चाताप, न अपराध भावना। 'ट्रिप' कहानी में पति–पत्नी के बीच मधुर क्षणों की समाप्ति हो चुकी है। संबंधों में आ रहे बदलाव को यह उजागर करती है। 'नींद' कहानी की नायिका अपने पहले व्यक्ति से अलगाव में आकार अतीव उत्तप्त हो जाती है। उसके लिए महत्वपूर्ण है तीसरा व्यक्ति। 'सुरंग एक ऐसी कहानी हैं जिसमें बेटे के मौत की ट्रेजेड़ी ने माँ को डँस लिया है। 'स्वीकृति' की जया का सत्य से निवाह नियोजित हुआ है। जब सत्य जपा को अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का माध्यम बनाने लगता है, तब जया तीसरे व्यक्ति के संपर्क में आती है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में अविवाहित स्त्रियों की छवि

पचपन खंभे लाल दीवारें

'पचपन खंभे लाल दीवारें' उषाजी का पहला उपन्यास है। इसमें सुषमा नामक भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिकता यंत्रणा का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। छात्रावास के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उन परिस्थितियों के प्रतीक हैं, जिसमें रहकर सुषमा को ऊब तथा घुटन का तीखा अहसास होता हैं। उन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी नियति है। आधुनिक जीवन की यह एक बड़ी विडंबना है जो कि हम नहीं चाहते वही करने को विवश हो जाते हैं। लेखिका ने इस स्थिति को बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है।

लेखिका ने नारी शोषण के नये आयाम को यहाँ उद्घाटित किया है। निवृत्त अपाहिज पिता के परिवार में यदि लड़की बड़ी है तो बेरोजगार पिता के परिवार का पालन–पोषण लड़की नौकरी करके करती है। कमाने वाली लड़की की शादी की चिंता परिवार वाले छोड़ देते हैं। सुशमा हॉस्टेल वार्डन है। अध्यापिका के पद पर कार्यरत है। अपाहिज पिता की पुत्री पर परिवार का पूर्ण उत्तरदायित्व है। वह नील से प्यार करती है। परिवार के प्रति प्रतिबद्धता के कारण वह अपने निजी सुख का त्याग करती है। आधुनिक अध्यापिका होने के अतिरिक्त उसके चारों ओर दीवारें हैं। सामाजिक दायित्व की, मानसिक कष्ट की, पद की, गरिमा की, पारिवारिक प्रतिबध्दता की। वह निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है। फिर भी भारतीय संस्कारों का प्रभाव नायिका में दृष्टिगत होता है। नायिका ने अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं का त्याग अपने परिवार के दायित्व के लिए किया है। डॉ. उषा यादव के अनुसार– ''इसकी कथा नायिका सुषमा आज के परिवर्तित परिवेश में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का वहन करती, संघर्षों के उत्ताप से पल–पल झुलसती और बदली सामामजिक मान्यताओं के तहत एक नई प्रेमवृत्ति को पोषण करती दिखाई देती है।''(13)

यह उपन्यास अन्तर्मुखी, कुण्ठित, स्वतंत्रता और कर्तव्य के बीच छटपटाती भीरू सुषमा की करूणा कहानी है। पक्षाघात से आसक्त पिता की वह सबसे बड़ी संतान है। पूरे परिवार के पालन का एकमात्र साधन वह है। घर, माँ–बाप तथा भाई–बहनों के लालन–पालन एवं शिक्षा की चिंता से उसके यौवन के वर्ष बीतते चले जाते हैं और साथ ही टूटते जाते हैं, उसके सुनहरे सपने। कभी वह अपने माँ–बाप को तो कभी परिस्थितियों को दोष देती वह लड़कियों के हॉस्टेल में वार्डन के पद को संभालती है। नील अपने हृदय का सच्चा प्यार और उसके परिवार की सारी जिम्मेदारियों को उठाने के आश्वासन के साथ उससे विवाह का प्रस्ताव करता है। किंतु भीरू सुषमा अपने में परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति नहीं संजो पाती और आत्मपीड़न से जलती रहती है। लोगों के उँगली उठाने तथा नौकरी टूट जाने के भय से वह नील से अलग होना चाहती है। अंत तक उसके भीतर का तूफान उसे उन्हीं पचपन खंभों और लाल दीवारों वाले हॉस्टल में टिके रहने को बाध्य करता है। वह अपने मन को समझाती है– ''जीवन में बहुत महत्वपूर्ण काम है सिर्फ विवाह ही तो नहीं।''(14)

रूकोगी नहीं राधिका

'रूकोगी नहीं राधिका' एक ऐसी युवती की कहानी है जो खुद में उलझ गई है। उसने अपने घर भारत में जो एकाकीपन झेला हैं अमेरीका पहुँचकर उसकी भयावहता और बढ़ जाती है। विदेश प्रवास का अनुभव उसके लिए लक्ष्य ऐसा है जैसा वह एक लंबी अंधकारात्मक सुरंग में यात्रा कर कर रही है। जहाँ न लक्ष्य दिखता है ना उसका अंत। राधिका की दुविधा एक ऐसी भारतीय नारी की दुविधा है जो अपनी दिशा तय नहीं कर पा रही है। वह अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य के लिए लड़ती है। राधिका ने पचपन से माँ क चल बसने के बाद अकेलेपन को जाना है। वह अपने पिता से इतना जुड़ गई है कि उन्हें ही अपने जीवन की धुरी मानने लगी

है। इसलिए जब पिता विद्या से विवाह कर लेते हैं तो वह अपने को निराधार, निर्वासित सा समझने लगती है। इसी कारण से वह एक विदेशी पत्रकार डैन के साथ भारत छोड़कर अमेरिका चली जाती है। वहाँ एक साल उसके संरक्षण में रहती है। बाद में किन्हीं कारणों से जब उनके संबंधों में तनाव आ जाता है तो वह अलग होकर अपनी कलात्मक संभावनाओं को विकसित करने का प्रयत्न करती हैं।

भारतीयता उसकी नस–नस में भरी हुई है। इसलिए वह कई बार सोचती है कि कैसा होगा वह देश जहाँ लोग इतनी आसानी से साथी बदल लेते हैं। डॉ. नरेंद्र मोहन द्वारा संपादित आधुनिक हिंदी उपन्यास में वे लिखते हैं कि– ''राधिका दो संस्कृतियों में पिसकर अनिर्णय और अकेलेपन को झेलती है। वह दोनों संस्कृतियाँ विदेशी और स्वदेशी में मिसफिट होकर रह जाती है।''(15)

वह हर किसी में अपने पिता का प्रतिबिंब ढूँढ़ती है। वह कहती है कि, मुझे युवा पुरूष सभी अपरिपक्व लगते हैं। डॉ. स्वर्णलता के अनुसार 'शिक्षा से उसने शिष्ट जीवन की परंपरा पाई है जिसे अपने जीवन में उतार लिया है। उसका शील और विवके परंपरागत पारिवारिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है। वह व्यक्तिनिष्ठ है। प्रतिभाशील, मननशील राधिका में भारतीय संस्कृति के प्रति मोह है। उसके जीवन की मान्यताओं को ठेस लगती है। इसलिए वह अतीत को भूलना चाहती है। वह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है पर यह प्रभाव कहीं भी उसके व्यक्तित्व पर थोपा हुआ–सा प्रतीत नहीं होता। वह बस वहीं तक ही जहाँ तक उसका व्यक्तित्व उसे ग्रहण कर सका है। इसलिए उसके विचारों में गाम्भीर्य है।''(16)

यह लघु उपन्याय प्रवासी भारतीयों की मानसिकता पर प्रकाश डालता है। राधिका स्वतंत्र चेतना की नारी है। वह देश छोड़कर विदश चली जाती है। यह घटना उसके चरित्र की संघर्श यात्रा का कारण बनती है। मानसिक दबाव, आधिपत्य भाव आदि लेकर वह विदेश पहुँचती है। राधिका के जीवन में अपनेपन, अकेलापन और असुरक्षा का भाव सदा निहित रहता है। राधिका आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी है। लेकिन उसे अपने स्वतंत्र जीवन में शून्यता एवं खोखलापन ही नजर आता है। जीवन की यांत्रिकता को देखकर उसको अपना जीवन आधारहीन, लक्ष्यहीन लगने लगता है। राधिका के जीवन का अकेलापन, ऊब, हताशा आदि भाव उचित साथी के अभाव के करण हैं। उसके प्रति आत्मीयता दिखाने वाला कोई नहीं है। राधिका एकाकीपन की शून्यता से घिरी नारी है। वह अकेली है। उसे अपनी जीवन यात्रा में कुछ पल के लिए डैन, अक्षय और मनीष मिल जाते हैं। भारतीय सभ्यता के साथ–साथ पाश्चात्य सभ्यता का समावेश भी इस उपन्यास में दृश्टिगत होता है। विमाता विद्या के प्रति राधिका की प्रतिक्रिया तीव्र है। आधुनिक शिक्षित समाज में युवा संतानों के रहते हुए पिता का विवाह, राधिका को विचलित कर देता है। विद्या को मानसिक त्रास देने में राधिका को विचित्र आनंदानुभूति होती है। आधुनिक नारी के बदलते दृष्टिकोण एवं मान्यताओं का प्रकाश इसमें हुआ है। राधिका बदलती आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी की कहानियों में परंपरागत बंधा हुआ दांपत्य जीवन चित्रित न होकर परस्थितिजन्य यथार्थ का आग्रह सर्वत्र दिखाई देता है। नई नौकरी, दरार भरने की दरार, नकली हीरे, बाँहों का घेरा, हार, घुटन एवं कमरे, कमरा और कमरे इन कहानियों में मन्नूजी ने दांपत्य जीवन में पति अपनी आकांक्षाओं और स्वार्थ को पूरा करने के लिए पत्नी की भावनाओं की उपेक्षा करता है। विडंबना यह है कि आधुनिक शिक्षित नारियाँ भी अपने व्यक्तित्व व अस्तित्व को दरकिनार करती हुई झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम को पालते हुए पति रूपी पुरुष की इस चाल को समझ नहीं पाती और खुद को सबसे अलग पाकर अंदर ही अंदर छटपटाती है। कील और कसक, तीन निगाहों की एक तस्वीर कहानियों में लेखिका ने दांपत्य जीवन में नीरसता, रिक्तता एवं ठंडापन पति–पत्नी के रिश्ते को कटुतर ही नहीं बनाता बल्कि उन्हें असामाजिक आचरण के लिए भी विवश करता है। 'तीसरा आदमी' कहानी में पति का संशय और अविश्वास दांपत्य जीवन में अलगाव पैदा करता है। दांपत्य जीवन के विघटन का मुख्य कारण पत्नी पर पति द्वारा किया जाने वाला संदेह ही है जिसके कारण दांपत्य जीवन टूटकर बिखर जाता है। 'बंद दराजों का साथ' कहानी में मन्नू भंडारी ने खंडित दांपत्य जीवन का चित्रण किया है, कहानी में आधुनिक नारी की मुक्ति यात्रा के उस छोर की ओर संकेत किया गया है जहाँ पहुँचकर उसे मजबूरन पारम्परिक पुरुषप्रधान व्यस्था के प्रति समर्पित हो जाना पड़ता है। नशा कहानी में दांपत्य जीवन में पति का शराबी होना पत्नी के लिए कष्टकर होता है। पति की व्यसनाधीनता सिर्फ उनके दांपत्य जीवन को नहीं तोड़ती अपितु पत्नी के लिए अनेक यातनाएँ पैदा कर देती है।

उषाजी की कहानियों का प्रमुख विषय नारी ही है। उनकी कहानियों का मूल उद्देश्य नारी जाग्रति का ही है। उषाजी की प्रत्येक कहानी में कोई न कोई नारी पात्र समाज को कुछ न कुछ संदेश दे जाता है। उषा प्रियंवदा ने नारी के कई रूपों का चित्रण करके समाज को कुछ संदेश देना चाहा है। भारतीय नारी को हमारे परिवेश को विदेशी समझकर भ्रामक भावनावश, भृष्ट यौनाचार में लिप्त होना नारी जीवन की उन्नति नहीं पतन का संकेत है, नितांत अमान्य है इसी उद्देश्य को लेकर उषाजी ने कई कहानियाँ लिखी हैं। जैसे चाँद चलता रहा, मछलियाँ, सागर पार का संगीत, कितना बड़ा झूठ, ट्रिप, सम्बन्ध, टूटे हुए, चाँदनी में बर्फ पर, प्रतिध्वनियाँ आदि कहानियों में जिन नारियों का चित्रण है वे भारतीय होते हुए भी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाये हुए है और वह यौनाचार को स्वतंत्रता से बढ़ा रही है इसपर उषा प्रियंवदा ने करारा व्यंग्य किया है। नारियाँ पुरुषों से कंधा मिलकर चलना चाहती है लेकिन स्वच्छंद यौनाचार के संबंधों के कारण उनका ही पतन होता है। इन सबसे हमें यह बोध मिलता है कि नारी चाहे आसमान को छू ले पर उसे उसकी जो मर्यादाएँ हैं उसे नहीं तोड़ना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. २६८.
2. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में मानव जीवन की समस्याओं का निरूपण, डॉ. दिलीप मेहर, दर्पण प्रकाशन, वल्लभ विद्या नगर, २०००, पृ. ११३.
3. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ३५८.
4. समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ, डॉ. पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, १६८६, पृ. १४६.
5. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ३८.
6. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ४१.
7. साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ, डॉ. विजया वारद, विकास प्रकाशन, कानपुर, १६६३, पृ. ३१.
8. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ७४.

9. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ८१.
10. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ८१.
11. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में मानव जीवन की समस्याओं का निरूपण, डॉ. दिलीप मेहरा, दर्पण प्रकाशन, वल्लभ विद्यानगर, २००८, पृ. १०१.
12. नायक खलनायक विदूशक, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, २००५, प्रथम संस्करण २००२, पृ. ४८.
13. डॉ. उषा यादव, हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृ. 77
14. उषा प्रियंवदा, पचपन खंभे लाल दीवारें, पृ. 10
15. डॉ. नरेंद्र मोहन, आधुनिक हिंदी उपन्यास, पृ. 47
16. डॉ. स्वर्णलता, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमी, पृ. 58